

प्राच्य, पारंपरिक और गैर पारंपरिक शिक्षण कार्यक्रम



प्राच्य और गैर- पारंपरिक अध्ययन कार्यक्रम



परिचय

- हमारी सीखने की प्रणाली हमेशा व्यर्थ की परीक्षाओं और पाठ्यक्रम उन्मुख अध्ययन विधि के साथ अविश्वासनीय रूप से विविध बनी हुई है। ऐसी स्थिति में छात्र ज्ञान अधिग्रहण से विचलित होते हैं और अनुत्पादक मामलों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।
- इस प्रकार इंजीनियरों को इंजीनियरिंग के बारे में बहुत कम पता है, डॉक्टर दवा के बारे में बहुत कम जानते हैं और इससे ज्यादा क्या कहना है कि अध्यापकों को पाठ्यक्रम से परे कुछ भी नहीं पता है। इस स्थिति में, यह जरूरी है कि हम विविधता को शामिल करने के लिए प्रणाली को एक अलग स्तर पर अद्यतन करें और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि छात्रों को किसी भी प्रकार की समस्याओं का सामना करने और मानकों में सुधार करने के लिए सशक्त बनाएं।

मौखिक प्रशिक्षण क्या है?

प्राच्य विद्या अध्ययन का अकादमिक क्षेत्र है जो पूर्वी और सुदूर पूर्वी समाजों और संस्कृतियों, भाषाओं, लोगों, इतिहास और पुरातत्व को एक साथ एकत्र करता है। अब सवाल उठता है कि यह महत्वपूर्ण क्यों है? यह कैसे महत्वपूर्ण है? ऐसे सवालों का जवाब देने के लिए हमें प्राच्य विद्या की गहराई में जाने की जरूरत है।

आजकल, आधुनिक समाज सभी प्रतियोगिताओं से भरा हुआ है और इन प्रतियोगिताओं से एक ऐसी स्थिति पैदा होती है जिसमें केवल शीर्ष वर्ग के उत्कृष्ट कार्य होते हैं। ऐसे मामले में, हर पहलू में ज्ञान और समस्या समाधान के एक बहुआयामी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित कर सकते हैं।

ऐसे मामले में, हर पहलू में ज्ञान और समस्या का एक बहुआयामी दृष्टिकोण - सॉल्विन जी यह सुनिश्चित कर सकता है। प्राच्य विद्या ठीक यही करती है।

बस भाषाओं के उदाहरण पर विचार करें। चीनी अब दुनिया भर में महत्वपूर्ण भाषा है, इसे जानने से न केवल आपके अवसरों में सुधार होता है, बल्कि यह व्यवसाय के क्षेत्र में हर कोने में अपनी प्रगति के कारण आपके अवसरों को बढ़ा सकता है।

जब शोधों का विश्लेषण किया जाता है तो हम देखते हैं कि सीखना केवल भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित के बारे में नहीं है, यह हमारे द्वारा स्कूल में 'पढ़ी गई और अध्ययन की गई' सामग्री की तुलना में अधिक मूल्यवान चीजों को समझने के बारे में है।

प्राच्य विद्या इस समझ का समर्थन करती है। इतिहास, भूत, वर्तमान, भविष्य के बारे में जानना। इसे समझना और इसे व्यावहारिक मामलों में उपयोग करने के लिए रखना। सब चीजों को विस्तार से जांचना, अपनी गलतियों को सुधारने की इच्छाशक्ति होना, गलतियों को स्वीकार करना और मन की उपस्थिति होना। यह सब समाज के लिए, व्यक्ति के लिए, सभी के लिए महत्वपूर्ण है। प्राच्य विद्या के अंतर्गत आने वाली विभिन्न संस्कृतियाँ विविधताओं को गले लगाती हैं और इस प्रकार मानव मन में मूल्यों का विकास करती हैं। वर्तमान पीढ़ी के लिए यह अत्यावश्यक है और इसका तात्कालिक उपाय मतभेदों को शामिल करने के साथ हुआ है।

पारंपरिक अध्ययन क्या है?

इसे उन्नत अध्ययन (advanced learning) के रूप में भी जाना जाता है, इसमें अवधारणाओं, सूत्रों और नोट्स को रटना और फिर परीक्षा में इसकी उल्टी करना शामिल है। प्राच्य विद्या की तुलना में यह अंक प्राप्त करने और इन परीक्षाओं के आधार पर रैंक प्राप्त करने पर अधिक केंद्रित है। इस तरह के अध्ययन के परिणामस्वरूप समय और ऊर्जा की बर्बादी होती है। सिद्धांत (थ्योरी) को रटने से आउटपुट बेकार हो जाएगा और सीखने की गुणवत्ता डूब जाएगी। यह स्थिति कॉलेजों से निकलने वाले छात्रों की गुणवत्ता को खतरे में डाल सकती है। ये प्रणालियाँ अन्य गतिविधियों को महत्व नहीं देती हैं जो छात्रों में होनी चाहिए। असाइनमेंट, आंतरिक परीक्षा, बाहरी परीक्षा, आंतरिक मूल्यांकन, आदि छात्रों के व्यक्तिगत जीवन, उनकी रुचियों, उनके शौक के मूल्य पर होते हैं। यह एक प्रमुख स्थिति है और इस सरोकार पर ठीक से ध्यान दिया जाना चाहिए।

हमारी संस्कृति से गुरुकुलम प्रणाली के गायब होने से इस स्थिति का मार्ग प्रशस्त हुआ है। अब, गुरुकुलम प्रणाली क्या है? पहले भारत में एक ऐसी प्रणाली मौजूद थी जिसमें छात्र अपने गुरुओं (शिक्षकों) के साथ रहते थे। यह हिंदू धर्म में पवित्र है और यह माना जाता है कि छात्र के सही निर्माण के लिए शिक्षक-छात्र का बंधन महत्वपूर्ण है। संबंध सहजीवी है क्योंकि शिक्षक और छात्र

दोनों इससे लाभान्वित होते हैं। छात्र अपने रोजमर्रा के जीवन के साथ शिक्षक की मदद करते हैं, जबकि शिक्षक उन्हें मूल मूल्यों में संलग्न करता है। इस प्रकार, वे एक दूसरे की मदद करते हैं।

इस तरह की परंपराएं छात्रों को शिक्षकों से सीधे गुणों को अवशोषित करने में मदद करती हैं। अब एक ऐसी विधि विकसित करना आवश्यक है जिसके द्वारा देश के प्राचीन ज्ञान और बुद्धि को पुनर्जीवित और संरक्षित किया जा सके। दुनिया भर के विद्वानों ने इन खोई हुई परंपराओं को पुनर्जीवित करने की कोशिश की है। लेकिन पश्चिमी संस्कृति के पीछे दौड़ने की प्रवृत्ति ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अपनाया और इस तरह हमारी सबसे बड़ी उपलब्धियां मिलीं। कक्षाओं, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि में विभाजन उसके बाद ही हुआ। पांडुलिपियों में संरक्षित हमारी संस्कृति भी इस विभाजन से क्षतिग्रस्त हो गई।

लेकिन इसके केवल नुकसान नहीं हैं, बल्कि ई-लर्निंग सुविधाएं छात्रों के लिए अवसरों की एक विस्तृत विविधता को खोलती हैं। यह छात्रों को अधिक 'देखें और सीखें' प्रदान करता है और उन्हें इसे बेहतर तरीके से जानने की भावना मिलती है। सचित्र और वीडियो ग्राफिक अभ्यावेदन अध्ययन के आयामों और गहराई का विस्तार करते हैं। प्राच्य विद्या की तुलना में जिसमें शिक्षक शामिल होते हैं, ई-लर्निंग का एक और फायदा होता है, जिसमें वास्तव में शिक्षकों को शामिल किए बिना छात्रों को ध्यान में रखना होता है। पारंपरिक अध्ययन में, मुख्य उद्देश्य परीक्षा पास करना और उस तरह रैंक हासिल करना है।

प्राच्य एवं पारंपरिक अध्ययन के बीच अंतर

प्राच्य	पारंपरिक
कोई ई-लर्निंग नहीं	अवधारणाओं की बेहतर समझ के लिए ई-लर्निंग को शामिल किया गया।
छात्र दिन-प्रतिदिन की समस्याओं से निपटते हैं और इसलिए भविष्य में क्या करना है, इसके बारे में एक स्पष्ट विचार है।	छात्रों को अपने शौक का पालन करना मुश्किल लगता है।
एक दृष्टि से जीवन का वादा करता है।	हर परीक्षा में स्कोर करने से व्यक्तिगत और अध्ययन जीवन के साथ संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।
अध्ययन थकाऊ नहीं है और छात्रों को इसका सार मिलता है।	अध्ययन पूरी तरह से परीक्षा के बारे में है।
यह सुनिश्चित किया जाता है कि अवधारणाएं स्पष्ट रूप से समझी जाती हैं।	छमाही पाठ्यक्रम पढ़ाई को आसान बनाते हैं।
बहुत सरल प्रणालियों से संबंधित है।	हर तरह से जटिल है।

सस्ता	महंगा
छात्र और शिक्षक के बीच अधिक बातचीत।	छात्र और शिक्षक के बीच कम बातचीत।
शिक्षक को किसी विशेष तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।	शिक्षक को विशेष ज्ञान की आवश्यकता है।
छात्रों की आंखों पर कोई दबाव नहीं डालता।	छात्रों की आंखों पर दबाव डालता है।

गैर-पारंपरिक अध्ययन

- गैर-पारंपरिक या गैर-परम्परागत अध्ययन चीजों को सीखने के रचनात्मक तरीकों से संबंधित है, चीजें सामान्य उलझन (labyrinths) से बहुत अलग हैं। यह डॉक्टर-इंजीनियर के रूढ़िवादी पथ से अलग करता है और नए और आधुनिक विकल्पों के लिए नए रास्ते और अवसरों के साथ इसे विस्तृत करता है।
- अधिक रचनात्मक, बेहतर विकल्पों की ओर इशारा करते हुए और इसका अधिकतम लाभ उठाना। इसे चुनने से पहले चुनाव को समझना पूरी तरह से आवश्यक है। लेकिन एक उचित चुनाव एक नया साम्राज्य, एक नया माहौल, **एक रास्ता अक्सर नहीं बना सकता है और इस तरह एक नया पथ प्रदर्शक बन सकता है।**
- कालीन प्रौद्योगिकी, ऐथिकल हैकिंग आदि इनमें से कुछ हैं। ये ऐसे मार्ग हैं जिन्हें अक्सर नहीं लिया जाता है, लेकिन वे अधिक ध्यान आकर्षित कर सकते हैं और भविष्य बना सकते हैं। सांध्यकालीन पाठ्यक्रम, कॉलेज तैयारी पाठ्यक्रम, ऑनलाइन और स्वतंत्र अध्ययन आदि इसके अंतर्गत आते हैं।

मुक्त शिक्षा:

- यह एक प्रकार की शिक्षा है, जहां शैक्षिक सामग्रियों को रचनाकारों द्वारा संशोधित किया जाता है और उन्हें अलग तरीके से वितरित किया जाता है। प्रस्तुतियाँ, पॉडकास्ट, मानचित्र, वर्कशीट आदि मुक्त शैक्षिक संसाधन सामग्री हैं।
- मुक्त शिक्षा के लिए सामान्य प्रवेश की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन उन्हें ऑनलाइन प्रदान किया जाता है। मुक्त शिक्षा प्रणालियों के माध्यम से सामान्य शिक्षा प्रणाली की बाधाओं को समाप्त किया जाता है।
- शुरुआती दिनों में, कंप्यूटर विकसित होने से पहले क्लबों का गठन किया गया था जहां यह मुक्त शिक्षा होती थी। बाद में जब शिक्षा ऑनलाइन साझा की जा रही थी, तो यह विचार दुनिया भर में चला गया।

- अध्ययन के गैर-पारंपरिक तरीकों से खुली शिक्षा शिक्षार्थियों को अपनी गति से सीखने और कहीं से कभी भी सीखने की अनुमति देती हैं।
- इग्नू एक ऐसी संस्था है जो मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से लोगों को ज्ञान प्रदान करने का काम करती है।

दूरस्थ शिक्षा :

- यह तब है जब छात्र किसी स्कूल में शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हो सकता है। इसे पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में भी जाना जाता है। इन दिनों इसका स्थान ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ने ले लिया है। वे गतिक्रम से या स्वयं के गतिक्रम के हो सकते हैं। लेकिन दुनिया भर के उम्मीदवारों के लिए उपयोगी साबित हुए हैं। इससे शिक्षा सर्वत्र फैल सकती है।
- इग्नू द्वारा 1991 में इग्नू अधिनियम के तहत एक सांविधिक निकाय के रूप में दूरस्थ शिक्षा परिषद (DEC) की स्थापना की गई थी।
- यह फरवरी 1992 में आरंभ हो गया था।
- **प्रो. माधव मेनन** की अध्यक्षता में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा दूरस्थ मोड के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शिक्षा के मानकों के विनियमन के संबंध में एक समिति का गठन किया गया था।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 24 मार्च, 2012 को दूरस्थ शिक्षा के नियामक प्राधिकरण को इग्नू से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में स्थानांतरित किया गया था। अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो के माध्यम से इस कार्य का प्रबंधन करता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रयास :

- इग्नू अफ्रीका के कई हिस्सों में यूनेस्को और अंतर्राष्ट्रीय क्षमता निर्माण संस्थान के साथ मिलकर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम प्रदान कर रहा है
- इग्नू ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग (SACODiL) और ग्लोबल मेगा यूनिवर्सिटी नेटवर्क (GMUNET) के लिए SAARC कंसोर्टियम में सक्रिय भूमिका निभाता है।

साक्षात

- यह छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों और ज्ञान की खोज करने वालों के लिए आजीवन सीखने हेतु मुफ्त में उपलब्ध कराने के लिए 30 अक्टूबर 2006 को शुरू किया गया वन स्टॉप एजुकेशन पोर्टल है।
- साक्षात के लिए सामग्री विकास कार्य सामग्री सलाहकार समिति (CAC) द्वारा देखा गया था।

राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (NKN) :

राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (NKN) सभी विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, अस्पतालों और कृषि संस्थानों को डेटा साझा करने और गीगाबाइट क्षमताओं वाले एक उच्च गति सूचना नेटवर्क पर देश भर में संसाधनों की गणना करने के लिए इंटरकनेक्ट करता है।

राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

वर्तमान में, भारत में 13 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय हैं, जो एकल मोड संस्थान हैं। इसका मतलब है कि वे केवल दूरस्थ मोड में शिक्षा प्रदान करते हैं। उनमें से कुछ हैं :

1. डॉ. बी. आर. अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
2. वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।
3. नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना, बिहार।
4. यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक, महाराष्ट्र।
5. मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (COL) :

- इसे वर्ष 1988 में राष्ट्रमंडल देशों की सरकारों के बीच एक समझौता जापन के माध्यम से स्थापित किया गया था। कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (COL) एक अंतर-सरकारी संगठन है जो मुक्त शिक्षण/दूरस्थ शिक्षा ज्ञान, संसाधनों और प्रौद्योगिकियों के विकास और साझाकरण को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार के प्रमुखों द्वारा बनाया गया है।
- COL विकासशील राष्ट्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुँच में सुधार करने में मदद कर रहा है।
- COL का मुख्यालय कनाडा के वैंकूवर में है और यह दुनिया का एकमात्र अंतर सरकारी संगठन है जो पूरी तरह से दूरस्थ शिक्षा और खुली शिक्षा को बढ़ावा देने और वितरित करने के लिए समर्पित है तथा ब्रिटेन के बाहर स्थित एकमात्र आधिकारिक राष्ट्रमंडल एजेंसी है।
- COL, राष्ट्रमंडल देशों द्वारा स्वेच्छा से वित्त पोषित है और यूनाइटेड किंगडम (ब्रिटेन) और कनाडा के बाद भारत तीसरा प्रमुख दाता है।
- उच्च शिक्षा के प्रभारी सचिव के माध्यम से भारत का प्रतिनिधित्व बोर्ड ऑफ गवर्नर्स और COL की कार्यकारी समिति द्वारा किया जाता है।

हमें क्या चाहिए?

वर्तमान पीढ़ी को प्राच्य और गैर-पारंपरिक अध्ययन के संयोजन की आवश्यकता है। इस प्रकार यह व्यक्तियों में रचनात्मकता और मूल्यों दोनों को एकीकृत करता है। छात्रों को वास्तविकताओं का सामना करने के लिए तैयार रहना है। पारंपरिक शिक्षा ऐसा नहीं कर सकती है।



ORIENTAL AND NON-CONVENTIONAL LEARNING PROGRAMMES



INTRODUCTION

- Our learning system has always remained incredibly diverse with futile examinations and syllabus oriented study patterns. In such a situation students are distracted from knowledge acquirement and concentrate more on unproductive matters.
- Thus engineers know very little about engineering, doctors know little about medicine, and what more to say teachers know nothing beyond the syllabus. In this condition, it's imperative that we upgrade the system to a different level to include diversities and most importantly empower students to face any sort of problems and improve the standards.

WHAT IS ORIENTAL LEARNING?

Oriental Learning is the academic field of study that collects Near Eastern and Far Eastern societies and cultures, languages, peoples, history, and archaeology together. Now the question arises, why is this important? How is this important? To answer such questions we need to go into the depths of oriental learning.

Nowadays, modern society is all about competitions and these competitions lead to a situation in which only the top class excels. In such a case, knowledge in every aspect and a multi-dimensional approach of problem-solving can ensure this. Oriental learning does exactly this.

Just consider the example of languages. Chinese is now a worldwide important language, knowing it not only improves your chances it can increase your opportunities in the business world due to its advancements in every corner.

When researches are analyzed we see that learning is not just about physics, chemistry, mathematics, it's understanding many things more valuable than the 'the read and study' stuff we do at school.

Oriental learning supports this understanding. Getting to know about history, the past, the present, the future. Understanding it and putting it to use in practical cases. Examining everything in detail, having the will to correct your mistakes, accepting the mistakes and having a presence of mind. All this is important for society, for the individual, for everyone. The different cultures that come under oriental learning embrace diversities and thus inculcate values in human minds. This is imperative for the present generation and this improvisation happens with incorporating differences.

WHAT IS CONVENTIONAL LEARNING?

Also known as advanced learning, it involves mugging up concepts, formulas, and notes and then vomiting it in the exams. Compared to oriental learning it is more focused on gaining marks and getting ranks based on these exams. This kind of learning just results in wastage of time and energy. The output will be useless theories mugged up and quality of learning will sink. This situation can put in danger the quality of students coming out of colleges. These systems do not give importance to the other activities students are supposed to be in. Assignments, internal exams, external exams, internal evaluations, etc cost

students their personal life, their interests, their hobbies. This a major situation and is to be dealt with properly attention.

The disappearance of the Gurukulam system from our culture has paved the way for this situation. Now, what is Gurukulam system? Earlier in India existed a system in which students used to stay with their gurus (teachers). This is sacred in Hinduism and it is believed that the teacher-student bond is important for the correct molding of the student. The relationship is symbiotic because both the teacher and students benefit from this. The students help the teacher with his everyday life while the teacher inculcates in them the basic values. Thus, helping each other.

Such traditions help students to absorb qualities directly from the teachers. Now it's necessary to evolve a method by which ancient knowledge and wisdom of the country could be revived and preserved. Scholars from around the world have tried to revive these lost traditions. But the trend of running behind western culture led to the adoption of the western education system and thus giving in our biggest achievements. The division into classes, colleges, universities, etc happened only after that. Our culture preserved in manuscripts also got damaged with this division.

But its not just disadvantages the e-learning facilities provided opens a vast wide variety of opportunities for students. It's more 'watch and learns' for students and they get a feeling of getting to know it better. The pictorial and video graphic representations expand the dimensions and depth of studies. Compared to oriental learning wherein teachers are involved e-learning has another advantage of actually keeping the students focused without involving teachers. In conventional learning, the main objective is to pass the examination and that way scoring ranks.

COMPARISON BETWEEN ORIENTAL AND CONVENTIONAL LEARNING SYSTEMS**ORIENTAL****CONVENTIONAL**

No e-learning	e-learning incorporates an improved understanding of concepts.
Students deal with day to day problems and hence have a clear cut idea as to do what in the future.	Students find it difficult to follow their passion.
Promises a life with a vision.	Scoring in every exam makes it difficult to maintain a balance with personal and study life.
Studies are not tiring and students get the essence of it	Studies are totally about exams
It is made sure that concepts are clearly understood.	Semesterwise studies make studying easier.
Deals with much simpler systems	Complex in every way
Cheap	Costlier
More interaction between students and teachers.	Less interaction between student and teacher
The teacher does not require any special technical knowledge	The teacher needs to have special knowledge
Puts no strain on the eyes of students.	Puts strain on eyes of students.

NON-CONVENTIONAL LEARNING

- Non-conventional or non-traditional learning deals with creative ways of learning things, things very different from the normal labyrinths. It deviates from the cliché doctor-engineer path and paves way for new and modern choices widening it with new avenues and opportunities.
- Pointing to more creative better choices and making the most out of it. It's totally necessary to understand the choice before selecting it. But a proper choice can build a new empire, a new atmosphere, a path not taken often and thus be a new pathmaker.
- Carpet technology, ethical hacking, etc are some of these. These are roads not often taken but can attract more attention and can create a future.

Evening courses, college prep courses, online and independent learning, etc come under this.

OPEN EDUCATION:

- It is a kind of education where the educational materials are modified by the creators and delivered to them differently. Open educational resources are materials like Presentations, podcasts, maps, worksheets etc.
- Open education does not require the usual admissions but they are offered online. The barriers of usual education system are eliminated through open education systems.
- In early days, before computers were developed clubs were formed where this open education would take place. Later when the education was being shared online the idea went worldwide.
- Open education deals with the learners to learn at their own pace and from where ever they'd like by non conventional methods of learning.
- IGNOU is an establishment that works to provide knowledge to people through open and distance education.

DISTANCE EDUCATION:

- This is when the student may not be physically present in a school. This is also referred to as correspondence course. These days it is taken online education systems. They maybe paced or self paced. But have proved useful to candidates all across the globe. The education can spread throughout.
- The Distance Education Council DEC was set up by IGNOU in 1991 as a statutory body under IGNOU Act,
- It became operational in February 1992.
- Under the chairmanship of **Prof. Madhava Menon** a committee was formed by the MHRD in respect of regulation of standards of education imparted through distance mode.

- On 24th March, 2012 the regulatory authority of distance education was transferred from IGNOU to UGC by the MHRD. Now UGC manages this function through Distance Education Bureau

INTERNATIONAL EFFORTS:

- IGNOU is offering distance education programmes in collaboration with UNESCO and International Institute for Capacity Building in many parts of Africa
- IGNOU also plays an active role in SAARC consortium for Open and Distance Learning (SACODiL) and Global Mega Universities Network (GMUNET).

SAKSHAT

- It is an one stop education portal launched on 30 October 2006 to facilitate lifelong learning for students, teachers and employee or for those in pursuit of knowledge, free of cost.
- The content development task for Sakshat was looked after by the Content Advisory Committee CAC.

NATIONAL KNOWLEDGE NETWORK (NKN):

National Knowledge Network NKN interconnects all universities, libraries, laboratories, hospitals and agricultural institutions for sharing data and computing resources across the country over a high speed information network having gigabyte capabilities.

STATE OPEN UNIVERSITIES

Presently, there are 13 state open universities in India, which are single mode institutions. This means they provide education only in the distance mode. Some of them are:

1. Dr B.R. Ambedkar Open University, Hyderabad.
2. Vardhman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan.
3. Nalanda Open University, Patna, Bihar
4. Yashwantrao Chavan Maharashtra Open University, Nashik, Maharashtra.
5. Madhya Pradesh Bhoj Open University, Bhopal, Madhya Pradesh

COMMONWEALTH OF LEARNING (COL) :

- It was established through a MoU between Governments of Commonwealth countries in the year 1988. The Commonwealth of Learning (COL) is an intergovernmental organisation created by Commonwealth Heads of Government to encourage the development and sharing of open learning/distance education knowledge, resources and technologies.
- COL is helping developing nations to improve access to quality education and training.
- The COL is Headquartered in Vancouver, Canada, and is world's only intergovernmental organisation dedicated solely to promoting and delivering distance education and open learning, and is the only official Commonwealth agency located outside Britain.
- COL is voluntarily funded by the Commonwealth countries and India is third major donor after United Kingdom and Canada.
- India is represented on the Board of Governors and Executive Committee of COL through Secretary, in-Charge of Higher Education.

WHAT DO WE NEED?

The present generation requires a combination of oriental and non-conventional learning. Thus, integrating both creativity and values in individuals. Students are to be prepared to face realities. Conventional learning cannot make this